

MUGBERIA GANGADHAR MAHANIDYALAYA

DEPT. OF BENGALI (UG)

ASSIGNMENT

Topics: ① বাংলা কাব্য আবিষ্য কেনভে মাইকেল মৃষ্টি সুন্দর দেখি?
অবদান চলমান?

② বাংলা সাহিত্য কবি প্রমোদ গুপ্তের অবদান আলোচনা
করো?

③ উনবিংশ শতাব্দীর বাংলা কাব্য সাহিত্য বিজ্ঞানের পথে।
পার্শ্বায়ুস ছুটিকা চলমান?

Full Name : TANIMA MAITY

Roll No: 132

Class : B.A (Honours)

Sem : III

Academic Year: 2023-24

Tanima Maity
30/11/23

Tanima Maity
Student Signature

Date of Submission: 30/11/23

Signature
30/11/23

বাংলা কাব্য আবিষ্য কেনভে মাইকেল মৃষ্টি সুন্দর দেখি? অবদান চলমান

উনবিংশ শতাব্দীতে নবজাগরণের পিল আলোচনা ও উৎসর্ক বিষয়ে
গত দেখে কাব্য চেতনা নতুন আদর্শ ও নথি আবিষ্য নিয়ে মাইকেল
মৃষ্টি সুন্দর দেখি (১৮২৮-৭৩) বাংলা কাব্য চেতনা আবিষ্য, বাংলা কাব্য
আধুনিকতা প্রবর্তক তিনি, পাঞ্চাশি আদর্শ মহা কাব্য, আধ্যাত্মিক,
আধুনিকতা প্রবর্তক তিনি, পাঞ্চাশি আদর্শ মহা কাব্য, আধ্যাত্মিক
পুরুষ, মাতৃকাব্য প্রচলিত রচনা করে বঙ্গায়োঃ বঙ্গায়োঃ কে বৈশিষ্ট্য
তুলেছেন, সমালোচনা করে আসিতে কুমার বচনাপার্শ্বায় তাহু তোঁঁ রাখে
তুলেছেন, —

"মৃষ্টি সুন্দর এ বচনের মধ্যে ৭০ বচনের পৌত্ৰী গুণিলু

"বৈশিষ্ট্য দেখলেন, " —

বিষ্ণু কবি পুরুষ নাথ উঁচু জন্মের কল্প করেছিলেন —

"আধুনিক বাংলা কাব্য প্রচৰ হয়েছে মৃষ্টি সুন্দর
দেখেছে, তিনি পুরুষ রেচেনেঁ: ১৮৯৮ চৰাই

যেখেনেঁ: কুমিল্লা (১৮৮৮) গড়েনৰ কাছে
চলেছিলেন শুধু বাংলায় মধ্যে, " —

চলেছিলেন শুধু বাংলায় মধ্যে, " —

বাঁলা জাহিরে প্রকারিষ্যকর মুজিতা মাইচেল মুর্মুন দেও,
 তিনি আবীনিক মুগের প্রথম মশাকুরি, প্রথম পর্ণকাঠ উচ্চারণ, প্রথম
 অভিশাস্ত্র চুন্দের প্রবর্তক, প্রথম জনেটিকার এবং প্রথম বীতিকার্য
 বটে, বায়ুক্ষেত্র মতে কবিত্বাতি লাভ করুবার জাতীয় প্রথম
 দুর্ঘাতিতে জাহিরে রচনা করুন এবং লেখো—

'The Captive Ladie' এবং 'Visions of the Past' নামক কাব্য
 (১৮৪৫-৪৬), কিছু হিস্ট্রি মত না মেঝে দেখুন জাহিরের মধ্যামে
 এবং বন্ধু গোবিন্দস বজাকের অনুচরণে বাঁলা খোয়া কাব্য
 রচনায় প্রবর্তিত, রচনা করুন—

- i) তিলোজ্ঞমাসকৃব কাব্য (১৮৫০)
- ii) মেঘনাদবর্ষী কাব্য (১৮৫১)
- iii) ব্ৰহ্মজ্ঞনা কাব্য (১৮৫১)
- iv) বীৰজ্ঞনা কাব্য (১৮৫২)
- v) চতুর্দশপদী কবিতাগলি (১৮৫৫)

মাইচেল মুর্মুন দক্ষের প্রথম কাব্য ৪ পদে রচিতে

'তিলোজ্ঞমাসকৃব কাব্য' (১৮৫০), মশায়েতের আদি পর্বের প্রেছান
 অবলম্বনে কাব্যটি রচিত, কাব্যটির মূল বিষয়— দুই দেশের
 মধ্যে দেশস্থের পৰাক্রমে দেশাবৰ্ষা স্বরূপ্ত হচ্য বৃষ্ণির দ্রুতগতি
 ইলে দেববালী অনুযায়ী রিষ্ট্রেজনাত্ত বন্ধু দেখে তিল তিল কোলা
 কোলা জোন্দুর আহুরণ করে তিলোজ্ঞমাসকৃব সূক্ষ্মত্ব এবং
 দুই দেশের দুভা ভাব অধিকার নিয়ে পৰাক্রম তিলে দুলিপু
 ইচ্য নিহত হয়, পুরু কাব্যে বিজেস্ত্র ইলো—

- i) হচ্য বাঁলা কাব্যে প্রথম অভিশাস্ত্র চুন্দ ও মুক গুণ্ঠাতে পঞ্জি
 লাঙ্গিত হয়,
- ii) পুরু কাব্যে সর্বী দিয়ে বাঁলা আধ্যান কাব্যে সুন্দো ঘটে,
- iii) অসুর চতুর্মুক্ত দৃদ্ধ্যে যে সহস্রকৃতি দিয়ে অঙ্গু কচেচুন
 কবিতা বাঁলা কাব্যে পুরু দেখা যাবানি,
- iv) পাঞ্চাত্য চৰামানিক কাব্য রচনার প্রকারণজ্ঞত জনেক জাহির
 পৰিজ্ঞিত হয় আলোচনা কাব্যে সর্বী,

— मृग्नदूनः द्वितीय काटु 'मेघनादवंड' काटु मरण्यस्त्रहना, रामायणः
लक्ष्मीकाण्ड वनित लक्ष्मीनः हाते गवत्पूर्व इन्द्रजितेष्व मेघनादः मृत्युः
काटिमीको अवलम्बन कर्त्तव्य उपरि सर्वे काटुति रुचिः, काटुति मरण्य
जमश्च रामायणे ज्ञाते ३८२ रात्रिये एतता रुचिः इवाच्छ, काटुति
विजेयस्त्रहने ।

(i) द्वितीय महाकाव्ये आदर्शे अहे वायु लक्ष्मीकल्पित द्वारा त्रिपुरा विजये
अटि-ज्ञाति गाहाकाव्ये ता व्रत्यु अल्पं वण्डिवा वा मादित्यिक महाकाव्ये
वृत्ति इत्याचे,

(ii) वायुति वण्डिविज्यास ओ चतुर्थे लक्ष्मीकल्पनाम् वर्णवि लक्ष्मीत्
होमाव, ताङ्गिल, धान्द, मिलान अथुमाके अनुभवुन वाहूण्डे
वायुग्रालुः व्यु त्रामात्तिग्राम्य तिनि ग्राम-वासिमी
के अर्थात् वारेहेन,

(iii) अहे वायु वर्णवि व्राम — लक्ष्मीने तुलनाम् व्यावन — इन्द्रजितिके
नाम व्युगेष्व इस्तिति महिमान्वित वरेहेन, अहे भाईग ग्राम
fellow व्यावने इहम नेत्राकार्य व्यु फावूर्सिटे Indrajit —
अहे त्रोठनीम् गतनाके वस्त्रानुद्दिति भाईग तिनिति वरेहेन,

(iv) वीर्यवास लक्ष्य वृचनाव द्वातिकृति द्वितीय वर्णवि व्यु त्रुभके
प्राणिन् वर्णे तुलादेन वायु, लक्ष्य आशा, अग्निशक्ति इत्येष्व
विनि भविष्यति, विष्यु ग्रामव, अम्बुद्वे महावाय्ये उदामता ओ
विमालाके यानिष्ठे तुलादेन,

— मृग्नदून दृष्टेर 'व्रजाञ्जना' ~~Ode~~ जातीय विजिकाटुविस्ते
रहना, श्रौ रक्ष्येर 'मेघनादवंड' काट्येर रवन्तुर्जनेष्व, आच्छ यज्ञोदा नवन्दनेष्व
सुमुस्त्रिव वंशीर्धिनि, कृष्णविष्ट्व देवात्रुता वार्षीर विलामोक्षिन्है काट्येर वृत्ते
विस्त्यु, काटुति विजेयस्त्रहने ।

i) वाऽल्य आतित्रे प्रथम Ode जातीय रहना त्रिजावे काटुति एतिथातिक
मूल्य आच्छ,

ii) तिनि ब्रह्मेर वार्षीकेऽकान्तु मानवीक्षणे उपद्धापित करेहेत्ते पर्हे काट्येर
मध्ये,

iii) काटुति पर्याय श्रिपदी दृष्टेः वेण्टियमय विनास अनुमिल प्रवर्तता
आनेवस्त्र लाभे करेहेत्ते, पर्यम आद्यानीय इये देष्टेहेत्ते,

প্রসিদ্ধ চূমন কবি হেরোইডেস Heroides এর Epistles of

Heroin পত্রকাটের আদলে মৃত্যুমূলক দণ্ড ঘোষণায় পুরুষের
অভিনাদের নিয়ম প্রযোজিত রচনা করেছেন বীরজ্ঞনা কাব্যগুলি,
কর্মসূরি দ্বিতীয় পত্রকাটনায় পরিকল্পনা থাকলে ওঠাটি সম্মত প্রবণ
মৃত্যু দ্বিতীয় পত্রে কাব্যটি জৈব করেন, কাটেন নাহিলেও?
কুমিল ভূতকীয় নবজাগরণ প্রচ্ছত দৃঢ়তা নিয়ে বিশুদ্ধ মাঝের প্রিয়ে
প্রাচীন চূমন করেছেন, তাই কবি আদের বীরজ্ঞনা কাটে
আভিষ্ঠি করতে চেয়েছেন, এই কাটের বিজেস্টের দিকগুলি
ইলো —

॥ পুরুষের প্রাচীন পৌরাণিক সাহিত্য, কিন্তু মূল আদল পাওয়াতের
গান্ধি স্বাতন্ত্র্য প্রবণ উনিষিস ভূতকীয় নবজাগরণ,

॥) এই কাটের অধিকাঙ্ক্ষ চূলের প্রয়োগে নাটকীয় ধৰ্ম পুরুষের প্রিয়ে
তাই অনেকে একে নাটকীয় একোকৃতিতে করেন,

॥) তিলোভূমায় চম অধিগ্নাম্যের চম সূচনা, বেঘনাদৃষ্টি পুরুষিক
প্রবণ বীরজ্ঞমায় তার চৰম পাবিলতি দেখা যায়,

॥) কাব্যটির বিশ্ববর্তুর উপন্থপনা, সমকালীন জীবনচৰ্চার আলাদা
চরিত্রগুলি, কেশ-চূল- আলংকারের কারুকৰ্ম পুরুষ সন্ধি,

ক্রান্তের শেষাহু সন্দেশে অবস্থান কালে কবি পেশার,
মিলতে প্রবণ চমকুপিয়েরের আদল বাঁলা সনেট রচনা করেন প্রবণ
চূলৰ্মূলকী কবিতাকলি আম দিয়ে প্রকা঳ কাটেন, চূল
২০৩ টি সনেটে মধ্যে প্রদেশকথা, বাল্পুর্ণি, খু-মধী, দেৱ-দেউল
কথা কাহিমীর দৃঢ়তি প্রাণিন্দি পেয়েছে, কবি মৃত্যুমূলকের নিষ্ঠত
অন্তর্বাসা যথাঅহু উচ্ছাবিতে ইঙ্গু সনেট সংকলন,

বাঁলা কাব্য-সাহিত্যে কবি মৃত্যুমূলক দণ্ডের
অবদানগুলি ইলো —

॥) মৃত্যুমূলকে কাব্য আধুনিক পুণের বার্জিন, বাঁলা কাব্য নবজাগরণ
প্রস্তুত স্বরচেতনা প্রবণ জীবনবৈধি সম্মুক্তি করেছেন তিনি,

॥) মৃত্যুমূলক পাঞ্চাঙ্গ কবিদের আদলে কাটের বিষ্ণু রূপ ও রীতি
চূলা ঘটিত্বের মধ্যে, তিনি বাঁলায় সহাকার, শীতিকার, পুরুষ

୩୯୦ ଅନେକଟି ପଥମ ଦେଖାଯା,

୩) ମସି ମୂରତ ବାଂଲା କାଗଜର ପଥମର ବକ୍ଷନ ଚଥିଲୁ ମୁକ୍ତି ଦିଯାଇଛି ଏବଂ ଆମୀଶ୍ଵର
ଛନ୍ଦର ଆମିକ ପଥମର ବାଂଲା ଅମ୍ବକ ଆମୀନିକି ମୁଦ୍ରାଟି କାଳି କାହିଁବି
ମୁମ୍ଭମା ଦାନ କରାଇଛି,

୪) ମାନବଭାବର ଆମୀନିକାର ଏହୋ ଲକ୍ଷ୍ମୀ, ମସି ମୂରତର କାଗଜର ଲାଭକ - ନାହିଁକାହାର
ଦେଖାନିଯାଇଛି ଏହିରୁଥିରେ ଓ ଆମୀନିକି ମୁଦ୍ରାର ଭୋବନାୟ ଓ କୀରନବୋଧିର ଆଲୋ-
କାର ଚିତ୍ରିତ, ଏହିକଥାରେ ମସି ମୂରତର ପଥମ ମାନ୍ୟ - ମହିମାର ମହାମାତ୍ର ପ୍ରକଟିତ
କରାଯାଇଛି।

୫) କାଙ୍କି ପ୍ରାଣୀତ୍ୱ, ପ୍ରାଣିନିତିତା, ନାରୀ ପଦାତି ପ୍ରକାରି ଚିତ୍ରାଙ୍କାରନା ଡାଃ କାଗଜର
ଆମୀନିକାର ଆଲୋକର ଦେଖାଇଲ କାହିଁବି ଛନ୍ଦର କାଗଜର
ମୁକ୍ତି ପାଇଲା ଯାଏ, ମସି ମୂରତ ବାଂଲା କାହିଁକାହାର ପ୍ରାଣ କାହିଁନି

୬) ବେଳିବିର ବାଲା ଯାଏ, ମସି ମୂରତ ବାଂଲା କାହିଁକାହାର ପ୍ରାଣ କାହିଁନି
ଓ ଚାରିଶତ୍ରୁଷ ନାମର ନାମର କୀରନବୋଧିରୁ ଆଲୋକର, ଅଙ୍କଳ ଦେଖାଇଲୁ, ଛନ୍ଦର
ମୁକ୍ତି ଆରିଲେ, ଦେଖାଇଲୁ ମହାମାତ୍ର କାଗଜର, ମହିମାର ମହାମାତ୍ର ମହିମାର
ପ୍ରାଣିନିତି ନାମର ନାମର କାଗଜର, ଆମୀନିକି ପ୍ରାଣିନିତି ନାମର ନାମର
ମୁକ୍ତି ଦେଖାଇଲୁ ଏହି ପଥମର ମୁଲ୍ୟାଧିକତା କାହିଁବି ପ୍ରଦାୟିତ କରାଯାଇଲୁ—

"ତିନି କଲାମ୍ବାଦେର ଲ୍ରାଯ ଦୁଃଖ-ମନ୍ଦ ପଥ ଅତିକ୍ରମ,
ଅନ୍ତିଷ୍ଠା ନାମର ମହାଦେଶେ ଆମୀନିକାର ନା କାଗଜିଲ ଚମ୍ପି

ନାମକୃତ ଛୁମିଛିଲେ ନାମ ବିଚିତ୍ର ଦୁଃଖର ଦେଖାନିବେଳେ
ପରମା ଶୁଦ୍ଧ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ
ପରମା ଶୁଦ୍ଧ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ ଗାତ୍ରିତ

(ବାଂଲା ଆମୀନିକି ବିଜ୍ଞାନେ
ଦୀର୍ଘ)